कल्कि बनाम मुहम्मद

क्या कल्कि ही मुहम्मद है?

मूकयोधा

रूपरेखा

इस पुस्तक को लिखने से पहले मैं स्पष्ट कर करता है कि इस पुस्तक को लिखकर मेरी किसी मे खोट निकालने में कोई रुचि नही है और न ही मेरा किसी मजहब के विरोध का अभिप्राय है लेकिन बार बार एक प्रकार का प्रपंच और झूठ इस्लाम मजहृब द्वारा फैलाया जाता है कि हिन्दू धर्म मे
कल्कि अवतार दरअसल में उनके पैगम्बर मोहम्मद जी है।
इस तरह की विडियोज आपको जाकिर नाइक नामक कट्टरपंथी मुस्लिम मजहब के मौलवी को भी मिल जायेगी जो की मुहम्मद को ही कल्कि बताते है।

इस पुस्तक को पढ़कर आप स्वयं सभी धर्मशास्त्र के तर्क सहित यह बात मानेंगे की यह कथन की मुहम्मद ही कल्कि है एक दम व्यर्थ और झूठ है।

मैं अपनी पहचान को गुप्त रखने को बाध्य हूँ क्यूंनकि पुस्तक के सामने आते ही आसुरी शक्तियां मेरे विरोध में कर्म करेंगी। फिर भी मैं यही कहूंगा कि मैं एक ब्रह्मवादी ब्राह्मण हूँ।

इस किताब को लिखने में निम्नलिखित किताबो से उल्लेख दिया है।

कल्कि जी का उल्लेख : कल्कि पुराण, भागवत पुराण, भविष्यपुराण।

मुहम्मद जी का उल्लेख:

- कुरान(जो कि इस्लाम की प्रमुखकिताब है)
- सफी उर रहमान मुबारकपुरी की किताब दी सील्ड नेक्टर (The sealed Nector)
- इब्न इशाक की लिखी सिरत रसूलअल्लाह
- सिरत अल नबीया
- Guillaume द्वारा लिखी पुस्तक लाइफ ऑफ मुहम्मद।
- इस्लामी तवारीख
- मुहम्मद इब्ने साद की तबाकत
- हदीस सही अल बुखारी

जनम

कल्कि जी का जन्म संभल गांव में होगा और उनके पिता का नाम श्री विष्णुयश और माता का नाम
सुमति होगा। (कल्कि पुराण अध्याय 2 श्लोक 4-5)

मुहम्मद जी का जन्म किधर हुआ इसपर बहुत शंका है, कुछ लोगो के अनुसार उनका जन्म मक्का
के शहर, जो कि पश्चिम में अरब में हुआ था और कुछ के अनुसार कही और!!

उनके पिता (वालिद) का नाम अब्दुल्लाह था, और उनकी माता (वालिदा) का नाम अमीना था।
(सील्ड नेक्टर, सिरत रासुल्लाह)

कुछ मुस्लिमों का तर्क है कि अब्दुल्ला माने होता है अल्लाह का दास और विष्णुयश माने विष्णु जी का यश*(Glory)* तो दोनों एक ही हुए, पर यह एक धूर्त और कुतर्क भरी बात है।

यह बात सभी जानते है कि इस्लाम मजहब में अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे की पूजा या इबादत करना एक बहुत बड़ा पाप या कुफ्र है, जिसकी पुष्टि कुरान के *4:48* के आयत से हो जाता है, तो क्या विष्णु एक हिंदू खुदा को अल्लाह बोलना तो एक बहुत बड़ा कुफ्र या पाप नही हुआ*??*

भला फिर विष्णु और अल्लाह एक कैसे हो जायँगे*??*

साथ ही साथ यह भी हम दावे से कहते है कि अगर किसी मुस्लिम को अभी भी अल्लाह या विष्णु एक दिखे तो वह अगले जुम्मे की नमाज में विष्णु जी के नाम का शहादा पढ़कर सुनाने को तैयार है*???*
साथ ही साथ, वह यह भी कहते है कि सम्भल एक स्थान है, तो वह कही भी हो सकता है इसीलिए मक्का ही सम्भल है, पर यह भी सरासर बेईमानी है क्यूंनकि सम्भल गांव के अलावा कल्कि पुराण में सिंहल द्वीप *(श्रीलंका)* और बद्रिकाश्रम, हरिद्वार, हिमालय समेत कई भारतीय जगहों के नाम है। अतएव यह संभल नाम की जगह भारत के अलावा कही और हो ही नही सकता।

भाई बंधु

कल्कि जी के अलावा उनके माता पिता को 3 बेटे और होंगे जिनके नाम कवि, प्राज्ञ और सुमन्त्रक
होगा। यह सभी कल्कि के बड़े भाई होंगे। (कल्कि पुराण अध्याय 2, श्लोक 4–5, 31–32)

मुहम्मद जी अपने माता पिता की इकलौती औलाद थे। उनके कोई भी सगा भाई नही था।
(सील्ड नेक्टर , सिरत रसूलल्लाह)

माता पिता का जीवन

कल्कि जी के माता पिता उनके साथ जीवन भर जीवित रहेंगे और उनकी मृत्यु अल्प आयु में नही होगी।

उनके पिता उन्हें धर्म का ज्ञान देंगे और उन्हें कलि के बारे में बताएंगे, साथ ही साथ कलि काल मे होती सनातन धर्म की हानि भी बताएंगे। (कल्कि पुराण प्रथम अंश, अध्याय 2 श्लोक 3-40;
तीसरा अंश,अध्याय 6 श्लोक 1-4)

कल्कि जी के कलि से युद्ध के उपरांत विष्णुयश जी सभी कार्य से निवृत होकर वानप्रस्थी हो जाएंगे और वह बद्रिकाश्रम (वर्तमान में बद्रीनाथ) को चले जायेंगे , जहां पर तप करते हुए वह देहत्याग करेंगे और उनके साथ ही सुमति जी भी उनके साथ ही देहत्याग करेंगी | (कल्कि पुराण तीसरा
अंश, अध्याय 6 श्लोक 43-48)

कल्कि जी अपने माता पिता के निधन के बाद उनका श्राद्धकर्म करवाएंगे। (कल्कि पुराण तीसरा
अंश, अध्याय 6 श्लोक 46)

दूसरी तरफ मुहम्मद जी के पिता (वालिद) अब्दुल्लाह जी का निधन उनके जनम से पहले , जब वह अपनी माता के गर्भ में थे उसी के आस पास ही हो गया था। वह मुहम्मद जी के बड़े होने तक उन्हें कुछ भी नही बता सके और उनकी माता अमीना जी भी जब मुहम्मद 6 साल के थे तब उनका भी निधन (इन्तकाल) हो गया था। इस प्रकार मुहम्मद जी बगैर माता पिता के ही जीवित रहे और उनके मरने के समय पर उन्होंने उनका कफ़न दफन नही किया क्यूंनकि वह उम्र में छोटे थे (सील्ड नेक्टर पेज 39, सिरत रासुल्लाह)

शिक्षा दीक्षा

कल्कि जी ने वेद और अन्य सनातन धर्म के पुस्तको का अध्ययन गुरुकुल में रहकर किया। गुरुकुल
में उनके गुरु श्री परशुराम जी थे जिन्होंने उन्हें वेद आदि धर्म पुस्तक और शस्त्र इत्यादि का भी ज्ञान दिया। परशुराम भी विष्णु के अवतार माने जाते है जो कि 7 चिरंजीवी में से एक है और कई वर्षों की उम्र भोग कर भी कलियुग तक जीवित रहेंगे । (कल्कि पुराण प्रथम अंश, अध्याय तीसरा श्लोक 1–11)

दूसरी ओर मुहमद जी की शिक्षा दीक्षा पर बहुत से मत है, कुछ लोगो का मानना है की उन्होंने कोई पढ़ाई नही
की, और कुछ फिरको का मानना है कि उन्हें अरबी भाषा और हिसाब का इल्म था क्यूंनकि वह एक ताजिर (व्यापारी) थे। उन्होंने अपनी बीवी खदीजा के साथ मिलकर कई साल व्यापार करते हुए गुजारे। (सील्ड नेक्टर पेज 41, इब्न ए हिशाम 1/187–188, सिरत रासुल्लाह)

यहां पर यह तो साबित हो जाता है कि मुहम्मद ने कभी भी सनातनी धर्म शास्त्र (वेद उपनिषद) नही पढ़े और न ही कभी उन्होंने किसी ऐसे उस्ताद (गुर) से जंग की कला सीखी थी जो कि सनातनी हो, जिससे वह कल्कि के चरित्र से मेल नही खाते।

पुस्तक का लिखा जाना

कल्कि पुराण के किसी भी विवरण में यह नही लिखा कि कल्कि कोई पुस्तक कहेंगे या संसार को देंगे जिसमे वह एक ईश्वर की उपासना को कहेंगे और इसके आधार पर ही विश्व का आधार उस ईश्वर को मानने वाले और न मानने वाले में कर देंगे, बल्कि कल्कि अपनी श्रद्धा और कर्म को वेद वाणी के समकक्ष रखते हुए ही कार्य करेंगे।

मुहम्मद जी ने अपनी जिंदगी में कुरान के पैगाम को दुनिया मे सुरा की शक्ल में दुनिया को दिया और कुरान उनकी ही बोली हुई किताब मानी जाती है जिसमे एक अल्लाह की बात की है और उसे ही इबादत के लायक माना है, जो ऐसा न करे तो वह उसे अल्लाह और इस्लाम का शत्रु मानते है।

विवाह

कल्कि जी के पूरे जीवन मे उनके दो विवाह होंगे, एक तो सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मा के साथ और दूसरा भल्लाट नगर की राजकुमारी रमा से होगा।

सिंहल द्वीप की राजकुमारी का स्वयंवर(एक प्रतियोगिता जिसमे कन्या अपनी मर्जी का वर चुन सकती है या वर को परीक्षा देनी पड़ती है) होगा जिसमें कई राजा उन्हें ब्याहने आएंगे।

लेकिन पद्मा को शिवजी से एक वरदान प्राप्त होता है कि जो कोई भी नर, पशु, गन्धर्व, नाग, किन्नर जो कि विष्णु जी का अवतार नही होगा वह उसे काम की दृष्टि से वरने या ब्याहने आएगा तो वह उसी समय स्त्रीत्व (नारी अंग वाला या हिजड़ा) हो जाएगा।
(कल्कि पुराण अध्याय 4 श्लोक 40-44)

अब जो भी राजा कल्कि जी के अलावा पद्मा से शादी करने आया तो वह स्त्रीत्व वाला होकर पद्मा की सहेली बन गया। (कल्कि पुराण अध्याय 5 श्लोक 11-28)

सिर्फ कल्कि जी ही इस श्राप से बच सके और उनके आने के बाद सभी अन्य राजाओं की श्राप से मुक्ति हुई और पद्मा का विवाह उनसे कर दिया गया।
(कल्कि पुराण प्रथम अंश,अध्याय 6,7)

उनका दूसरा विवाह भल्लाट नगर के राजा शशिध्वज की पुत्री रमा से हुआ था। जब कल्कि जी युद्ध मे शशिध्वज की परीक्षा लेने के लिए जानबूझ कर मुर्छित हो गए तो भी शशिध्वज ने उनकी
हत्या नही की, बल्कि अपने साथ उन्हें और सत्य को ले गया, जहाँ पर राजा शशिध्वज की पत्नी ने मान मनुहार से कल्कि जी को प्रसन्न कर लिया और अपनी पुत्री का विवाह उसकी अनुमति लेकर उनसे कर दिया। (कल्कि पुराण तीसरा अंश, अध्याय 9-10)

कल्कि जी की दोनों में से कोई भी पत्नी उनके जीवित रहते नही मरी और न ही उनकी कोई भी पत्नी उनके किसी नजदीकी रिश्ते में कुछ लगती थी। उन्होंने युद्ध मे किसी को भी मारकर उसकी स्त्री का हरण नही किया और न ही कोई काम क्रीड़ा के लिए गुलाम रखी।

दूसरी ओर मुहम्मद जी के 3 निकाह(हुए) जिनमे से कोई भी किसी द्वीप(टापू) की राजकुमारी से नही हुआ। उनकी सभी बीवियों के बारे में सील्ड नेक्टर पेज 311–313 में संपूर्ण विवरण मिल जाता है।

उनका पहला निकाह खदीजा नाम की एक धनी कुरैश कबीले की औरत से हुआ। खदीजा की माँ फातिमा बिन्त जैदह मुहम्मद की माँ की तीसरी बहन लगती थी तो इस प्रकार खदीजा उनकी मौसी की लड़की हुई। खदीजा एक सफल अरबी व्यापारी थी और उसके रिश्ते के लिए सभी लालायित रहते थे। (मुहम्मद इब्ने साद की तबाकत, इब्ने इशाक, सिरत रासुल्लाह पेज 82, सील्ड नेक्टर पेज 41)

अब खदीजा के बारे में सुन्नी फिरके का विचार है कि उनके पहले भी निकाह हो चुके थे, लेकिन शिया फिरके का मानना है कि उनका कोई निकाह पहले नही हुआ था, हालांकि दोनों फिरके मानते है कि उनके निकाह के वक़्त मुहम्मद 25 साल के थे और खदीजा 40 साल की थी। (अल तबारी, मुहम्मद का जीवन Guillaume, मनाक़िब अल अबी तालि, सील्ड नेक्टर)

खदीजा मुहम्मद के जीवत रहते ही 65 साल की उम्र में उन्हें छोड़ कर दुनिया को अलविदा कह गयी।

उनका दूसरा निकाह सौदा बिन्त जमा से हुआ था जो कि एक विधवा अरबी औरत थी, जिसका पति मुहमद के कहने पर पहली हिजरत करके अबीसीनिया गया था। बाद में जब वह लौट कर मक्का आया तो कुदरती वजह से मर गया जिसके बाद मुहम्मद ने उससे निकाह कर लिया। (तारीख अल रसूल व अल मुल्क, सील्ड नेक्टर पेज 81)

उनका तीसरा निकाह आएशा बिन्त अबू बकर से हुआ जो कि उनके दोस्त अब बकर (और बाद में मुस्लिम राज का पहला खलीफा या सम्राट) की बेटी थी। निकाह के समय उनकी उम्र 50 पार थी और आएशा की उम्र 6 साल की रही थी। (तबारी, सिरत रासुल्लाह, सील्ड नेक्टर पेज 88, सहीह अल बुखारी)

उनका चौथा निकाह हफ्शा बिन्त उमर से हुई जो कि एक विधवा थी और उमर (जो कि बाद में दूसरा खलीफा बना) उसकी बेटी थी

उनका पांचवा निकाह जैनब बिन्त खुजईमा से हुआ था जो कि एक विधवा थी और रिश्ते में मुहम्मद के चचेरे भाई की बीवी लगती थी, जिसके मरने के बाद मुहम्मद ने उससे निकाह कर लिया था।(सील्ड नेक्टर पेज 311–312, एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इस्लाम)

उनका छठा निकाह उम्म सलामा हिन्द बिन्त अबी उम्मीया से हुआ था जो कि उनके ही एक शागिर्द अबु सलामा की विधवा थी, जो कि उहद की जंग में मारा गया था।

उनका सातवां निकाह जैनब बिन्त जआहश से हुआ जो कि रिश्ते में उनके गोद लिए हुए बेटे जैद की बीवी थी। जैद ने अज्ञात कारण से उसके साथ तलाक ले लिया और उस के बाद ही मुहम्मद ने उससे निकाह कर लिया। साथ ही साथ किसी बच्चे को गोद लेने का रिवाज भी इस्लाम से बंद कर दिया था।
(तारीख अल रसूल व मुल्क, सील्ड नेक्टर पेज 312)

उनका आठवां निकाह जौवाररिया बिन्त अल हरित से हुआ जो कि उनके दुश्मन कबिले बनू मुस्तालिक की लड़की थी। जंग में लूट के समय वह पकड़ी गई और माल ए

गनीमत के तहत मुहमद के साथी को दे दी गयी। बाद में उसने अपने वास्ते रिहाई की मांग की और मुहम्मद से निकाह करके इस्लाम कबूल लिया। (सिरत रासुल्लाह, सील्ड नेक्टर 312)

उनका नौवां निकाह उम्म्म हबीबाह उर्फ रमलाह बिन्त अबी सुफियान से हुआ जो कि मुहम्मद के एक चेले उबैदुल्लाह की बीवी थी जो की उनके कहने पर एबिसिनिया में हिजरत करके गया था, पर उबैद के ईसाइयत में चले जाने और बाद में उसके इंतकाल होने से बाद में मुहम्मद ने उनसे निकाह कर लिया। (सील्ड नेक्टर, सिरत रासुल्लाह)

उनका दसवा और ग्यारवाह निकाह हुआ रेहाना बिन्त जैद और सफिया बिन्त हुयाय जो कि उनके दुश्मन यहूदी कबीले के लोगो की औरते थी। रेहाना जो कि बनू नादिर और बनू कुरैज़ा कबीले के हारने पर पकड़ में आ गयी थी और एक लौंडी (काम क्रीड़ा वाली गुलाम) के रूप में कुछ समय रही,
जिससे बाद में मुहम्मद ने निकाह कर लिया। बिल्कुल इसी तरह सफिया भी जब बनू कुरैज़ा के यहूदी लोगो के हार जाने और मारे जाने पर पकड़ में आ गयी तो एक लौंडी बनकर मुहम्मद के पास लायी गयी। तब तक उसके पिता और पति की हत्या की जा चुकी थी और बाद में इन्होंने इस्लाम कबूल
करके मुहम्मद से निकाह कर लिए। (सिरत अल नबीया, सिरत रासुलह, लाइफ ऑफ मुहम्मद, सील्ड नेक्टर पेज 312)

यही हालात 12वी बीवी मारिया बिन्त शमून (मारिया किबतिया) का भी था जो कि मिस्र से किसी मिस्र के गॉवरनर की एक भेंट के रूप में लौंडी थी जिससे मुहम्मद ने बाद में निकाह कर लिया। (सिरत रासुल्लाह, सिरत अल नबी)

उनका 13 तेरहवा निकाह मैमुनाह बिन अल हरित के साथ हुआ था जो की उमरा के जमाने में हुआ था जो की हिजरत का सातवां साल था।

यहां पर आप देख सकते है कि जहां कल्कि के सिर्फ दो विवाह वर्णित है, उधर मुहम्मद के 13 निकाह थे जिनमें से दो औरते जंग में पकड़ी गई और लौंडी थी। उनके जीवित रहते हुए ही उनकी पहली पत्नी खदीजा मर ययी थी, जो कि कल्कि जी के जीवन से बिलकुल उलट है। इससे स्पष्ट है कि कल्कि और मुहम्मद एक नही हो सकते।

संतान

कल्कि जी के चार बेटे थे जिनका कलयुग के अंत मे उन्होंने राज्याभिषेक कर दिया था और इसके बाद वह वन को चले गए। (कल्कि पुराण तीसरे अंश अध्याय 19, श्लोक 12-14)

मोहम्मद जी के 7 औलाद हुई जिसमें से तीन बेटे और 4 बेटियां थी। तीन बेटे कासिम, अब्दुल्लाह, इब्राहिम में से कोई भी जवानी तक नहीं पहुंचा और 4 साल का होने से पहले ही मर गये। उनकी चार बेटियां हालांकि काफी साल की उम्र देख कर गयी पर उनमें से किसी का भी खलीफा (राजा) के तौर पर तख्तनशीनी (राज्याभिषेक) नहीं किया गया। क्योंकि शरीअत या इस्लामी कानून में औरत को राज करने का हक नही है। (अल फारूकी की किताब मुहम्मद की जिंदगी; किताब अल तबक़त अल कबीर, सील्ड नेक्टर)

स्थानांतरण

कल्कि को कभी भी और किसी भी कारण या वजह से अपना पैतृक निवास यानी शम्बल गांव छोड़कर नही जाना पड़ा। वह जब भी युद्ध पर गए और हमेशा वापस शम्भल लौट कर आये।
(कल्कि पुराण, भागवत पुराण)

मोहम्मद को अपना पैतृक निवास मकका छोड़ कर मदीना की तरफ हिजरत (स्थान छोड़ कर जाना) करनी पड़ी थी क्यूंनकि उनके नए मजहब (सम्प्रदाय) के कारण अरब के कुरैश कबीले के लोग उनके शत्रु हो गए थे।

वस्तुत अरब के लोग मूर्तिपूजक (बुत परस्त) थे, और मुहम्मद का नया मजहब(सम्प्रदाय) बुत परस्ती को हराम (अवैध) या कुफ्र(पाप) मानता था। इसी कारण से सभी कुरैशी लोग उन्हें
(इस्लाम मजहब वालो को) अपना शत्रु मानने लगे और सन 622 में वह अपने मजहब के लोगो के साथ मदीना चले गए। (सील्ड नेक्टर, सिरत उल नबी, सिरत रसूलल्लाह)

प्रथम युद्ध वर्णन

कल्कि जी ने अपने जीवन का प्रथम युद्ध किकटपुर नाम के नगर के खिलाफ किया जिसमे बौद्ध रहते थे।

नोट किया जाए यह बौद्ध जिनका उल्लेख कल्कि पुराण में है, यह सिद्धार्थ गौतम के मत के अनुयायी नही
लगते, वरन कोई अन्य नास्तिकवादी सम्प्रदाय (जैसे कि साम्यवाद, कम्युनिस्ट, नव बौद्ध) वाले लगते है; क्योंकि बौद्ध मत के लोग ज्यादातर अहिंसक और शांति में विश्वास रखते है। जबकि कल्कि पुराण वाले बौद्ध हिंसक; वेद धर्म के विपरीत है, परलोक में विश्वास न रखने वाले, धन स्त्री और भोजन में भेद न करने वाले (कुछ भी खा सकते है, किसी भी स्त्री से रिश्ते का ख्याल करे बिना सम्बन्ध रख सकते है, किसी का धन लूट सकते है) है।
यह यकीनन सिद्धार्थ यौतम वाले बौद्ध नही बल्कि साम्यवादी लोग है, जो नास्तिकवादी होते है। आज के संदर्थ में चीन ऐसा देश है।

बौद्ध जो कि किकटपुरी के राजा जिन के राज में थे, उन्होंने कल्कि को देखते ही शस्त्र निकाल लिए और उनपर हमला किया, और कल्कि जी की लड़ाई उनसे होनी शुरू हो गयी। इस युद्ध मे उनके 3 भाई, अन्य राजागण और मित्र भी शामिल थे। इस युद्ध मे कल्कि और उनके मित्रो ने सभी बौद्ध
और म्लेच्छों को मार गिराया, और उनका धन सम्पदा लेकर वापस अपने नगर चले गए।

(कल्कि पुराण दूसरा अंश, अधयाय 6, श्लोक 4-45)

(दूसरा अंश, अध्याय 7 सम्पूर्ण और तीसरा अंश, अधयाय १ सम्पूर्ण)

दूसरी ओर मुहम्मद जी की पहली लड़ाई यानी की बद्र की जंग अपने ही कबीले के लोगों से हुई थी जब वह मदीना की ओर हिजरत करके चले गए थे। जब वह मक्का से मदीना चले गए तो उन्हें मक्का की तरफ जाते अबु सुफियान के कारवां का पता चला, तो उनके दिल मे हुआ कि इसपर धावा बोला जाए। लेकिन अबु सुफियान को भी इसका

पता चल गया और उसने मकका में अम्र इब्न हिशाम उर्फ अबु जहल को लिखकर मदद मांगी और फौरन अपना रुख बदल दिया और बद्र की तरफ बढ़ गया।

इस जंग से पहले की रात को बद्र के जंग वाली जगह पर बारिश भी हुई थी, जिसे मुस्लिम अल्लाह की तरफ से मदद मानते है। (सील्ड नेक्टर पेज 136–137)

इधर मुहम्मद ने भी 300 के आसपास लोग मदीना से इकट्ठे कर लिए जो कि अबु सुफियान के कारवां को लूटने में मदद कर सके। उनके पास 70 ऊंट और 2 घोड़े थे। वही दूसरी ओर अबु जहल ने मक्का से 300 मर्द, 00 घोड़े और बहुत सारे ऊंट इकट्ठे कर के अबु सुफियान की रखवाली के लिए रुखसत की, जिनमे से बहुत से लोग बहुत खुश दिल न होकर
और अपनी मर्जी से जंग लड़ने के बजाए सिर्फ अबु जहल की वजह से जा रहे थे।

इधर मुहमद और उनके साथियों ने ज्यादातर आस पास के सभी कुओं पर कब्जा कर लिया ताकि दुश्मनों को प्यासा रखकर उन पर जीत पाई जाए। (सील्ड नेक्टर पेज 136)

यही पर जब अबु जहल के आदमी पहुंचे तो उन प्यासों पर मुहम्मद के आदमियों ने हमले किये, और उन्हें पानी पीने से रोका, जिसपर जंग की शुरुआत हुई। तीरों की बारिश दोनों ओर से हुई और लोग मारे जाने शुरू हुए।

हालांकि फिर मुस्लिमो ने बहुत जोश से इन अबु जहल के आये लोगो पर हमले किये, जिससे प्यासे और गीली मिट्टी के करण तंग हुए कुरैसी लोगो मे अफरा तफरी मच गई। हालांकि इस डर को मुस्लिम अल्लाह और उसके फरिश्तों का कमाल समझते है, पर यहव चालाकी और फरेब के कारण जीती हुई जंग ज्यादा है।

इसके बाद मुहम्मद ने पकड़े गए कुरैशी लोगो से फिरौती की रकम ली और उनकी जान बक्श दी।
इसके बाद मुहम्मद और उनके मुस्लिम वापस मदीना चले गए।

इन दोनों जंगोी या युद्ध मे देखने वाली बात है कि मुहम्मद की लड़ाई अपने ही लोगो से हुई थी जो उसके भगवान अल्लाह को नही मानते थे, जबकि कल्कि की लड़ाई बौद्धों से हुई।
जहाँ पर मोहमद ने कुओं और कुदरती चीजोी का सहारा लिया, वहीं कल्कि ने सीधे लड़ाई की। मुहम्मद ने धन के लालच में लड़ाई करी; जबकि कल्कि ने अधर्म और नास्तिकों के विनाश के लिए।

स्त्रियों के साथ बर्ताव

कल्कि कभी भी किसी स्त्री पर कोई हमला नही करेंगे, न ही वह कोई भी स्त्री दासी या रखैल रखेंगे। ऐसा कोई भी वर्णन कल्कि पुराण में नही मिलता जब उन्होंने किसी महिला के साथ कोई अभद्र हरकत की हो।

जब किकट्पुरी में उन्होंने पहले युद्ध किया, तो मलेछो के मरने के बाद उनकी स्त्रियों ने भी हथियार उठा लिये थे और उन्हें मारने के लिए युद्ध मे आ गयी थी, लेकिन कल्कि जी ने उनसे इज्जत के साथ बात की और उनके समझाने से उन स्त्रियों ने कल्कि जी से युद्ध की बात छोड़ दी और अपने
नगर में वापस चली गयी।
(कल्कि पुराण तीसरा अंश अधयाय 2 श्लोक 11-38)

जब वह किकटपुरी से लौटे तो उन्होंने बहुत से ऋषि मुनि भयभीत हुए चक्रतीर्थ में मिले, और जब उन्होंने उनके डर और भय का कारण पूछा तो उन्होंने कहा की हम एक राक्षसी से परेशान है जिसके सांसों की हवा से हम परेशान है, वह कुथोदरी नाम की राक्षसी है। उसकी ऊँचाई बहुत
ज्यादा है, उसके स्तनों से निकला दूध इतना है कि हिमालय से एक नदी बहती है। इसपर कल्कि जी ने अपने साथियों के साथ कुथोदरी राक्षशी पर हमला किया। जिसपर उस राक्षशी सांस अंदर खींचकर कल्कि जी को अपने पेट मे पहुंचा दिया। कल्कि ने तब उसका पेट फाड़ा और बाहर को निकले।

(कल्कि पुराण तीसरा अंश अध्याय 2 , श्लोक 1 से 40)

मुहम्मद जी का कभी भी कोई भी युद्ध किसी राक्षसी से भी नही हुआ जैसे कल्कि की बारी में हुआ था।

दूसरी बात मुहम्मद जी की कभी भी कोई लड़ाई स्त्रियों से नही हुई, जिसमे उन्होंने स्त्रियों को कोई ज्ञान
देकर छोड़ा हो, बल्कि इससे उल्टे उन्होंने युद्ध मे पकड़ी जाने वाली औरतों को दासियों और रखैलों

की तरह बांटा, बल्कि मुस्लिमो को उनके साथ अमानवीय व्यवहार की भी आज्ञा दी।

निम्नलिखित हदीस की किताबों के रेफरेंस देखिए:–

मुहैरिज का बयान है कि जब वो अबु सईद के पास गया और अज़्ल के बारे में पूछा, तो उसने कहा कि वो रसूलल्लाह के साथ बनू मुस्तलीक वाले गजवा पर गए जिधर उन्होंने कई सारी अरबी काफिर (गैर इस्लामी) औरते पकड़ ली। अब अबु सईद और उसके साथियों को अपनी बीवियों से हमबिस्तरी किये काफी दिन हो गए थे , जिस लिए उसने सोचा कि अज़्ल करके ही अपना काम
चला ले। पर उसने रसूलल्लाह से एक बार पूछा कि क्या वह इन औरतों से अज़्ल(यानी की सम्भोग करते हुए योनि में वीर्य स्खलन या Coitus Interruptus) कर लें?
रासुल्लाह ने कहा कि अजल की कोई जरूरत नही है, क्यूंनकि कयामत के दिन तक जिसको आना है, वह वजूद में आकर ही रहेगा। इसीलिए अज़्ल न करके सीधे ही जो करना है करो।

(सही बुखारी वॉल्यूम 3 बुक 46 नंबर 718)
(सही बुखारी वॉल्यूम 5 बुक 59 नंबर 459)

अबु सईद का बयान:
जब मैने रासुल्लाह से पूछा की हम अपने माल ऐ गनीमत (लूटपाट के बाद हाथ लगा धन,चीजें और औरते) में से कुछ के बदले में कीमत लेना चाहते है, इन औरतों के साथ अज़्ल के बारे में आपके कया ख्याल है ??? (अज़्ल मतलब की शिश्न या पुरुष प्रजन्न अंग को स्त्री अंग में वीर्य झड़ने से पहले निकाल लेना, ताकि स्त्री गर्भवती न हो जाये)

इस पर रासुल्लाह बोले की क्या तुम यह सच मे करना चाहते हो। बेहतर है कि ऐसा न करो क्यूंनकि जिस रूह(आत्मा) को वजूद में लाना है , अल्लाह ने उसे तय कर लिया है।

(सही बुखारी वॉल्यूम 3 बुक 34, नम्बर 432)

इसी के ऊपर कुरान की आयत 4:24 ये कहती है कि इस्लाम मे निकाहशुदा औरत से निकाह हराम है, बशर्ते वह तुम्हारी मालिकाना हक की औरत (दासी या लौंडी) न हो, इनसे जिना(ब्लातकार) भी हराम नही है। ध्यान रहे कि निकाह ही इस्लाम में मान्य संबंध है और काफिरों के विवाह को वह हराम या गैर इस्लामी काम समझते है।

मोहम्मद ने इसीलिए जब खैबर की जंग में जब तमाम यहूदी कबीले बनू नादिर समेत पर हमला करके 17 साल की यहूदी लड़की सफिया को उसके पति किनाना (जिसने

मुहम्मद के लोगो को खजाने के बारे में नही बताया) और पिता को मारकर कैद कर लिया तो उसके साथ उन्होंने निकाह किया और फिर उसके साथ संबंध बनाए।

(हदीस सही बुखारी, सिरत रासुल्लाह)

इसके अलावा जब अस्वा बिन्त मरवान नाम की एक औरत ने मुहम्मद के खिलाफ ये बयान दिए कि वह कोई पैगम्बर नही तो मोहम्मद ने गुस्से में आकर उसके हत्या के लिए अपने आदमी को भेजा जिसने उसे रात में जाकर उसके दूध पीते बच्चे के सामने कत्ल कर दिया था। (इब्ने इशाक,
इब्ने साद)

इन सभी बातों से आप कल्कि और मुहम्मद में स्त्री के प्रति अंतर को समझ सकते है।

सूर्यवंशी और चंद्रवंशी राजा

कल्कि से मिलने दो राजा आएंगे जो कि तपस्वी के वेश में होंगे जो कि क्रमश सूर्यवंश (यानी श्री राम) के वंशज मरु और चन्द्रवंश के वंशज (यानी श्रीकृष्ण) देवापि होंगे। यह अपने वंश के बारे में कल्कि जी को बताएंगे और कल्कि उन्हे अयोध्या और हस्तिनापुरी नगर मलेछो से छीनकर देने का वचन देंगे।
(कल्कि पुराण तीसरा अंश अध्याय 3 और 4 सम्पूर्ण)

मुहम्मद जी से मिलने कभी भी कोई भी सूर्यवंशी या चंद्रवंशी राजा तपस्वी या साधु के भेष में नही आया और अगर आता भी तो मोहमद उसे काफिर बोल कर मरवा देते। न ही मुहम्मद ने कभी भी अयोध्या या हस्तिनापुरी नाम के शहरों बारे में कुछ भी कहा????
किसी भी हदीस या सिरत में इसका कोई जिक्र नही है!!

* कलि (कल्कि का शत्रु)
कल्कि पुराण में सबसे बड़ा शत्रु जो कल्कि का है वो कलि है, कलि हर बुराई का जनक है और तमाम पापों के लिए जिम्मेदार है, वह कलियुग के स्वामी है और उसकी जिम्मेदारी पाप को फैलाने का है।
कलियुग की कुछ निशानियां जो कल्कि पुराण में दी गयी है वह इस प्रकार है:-

कलि के प्रभाव में आकर व्यक्ति धर्म द्रोही और धर्म विरुद्ध बनेगा, वह घोर दंभी, दुराचारी, अधर्मी, पापात्मा होगा। वह वर्ण व्यवस्था, वेद, शाश्त्रो को नही मानेगा।सब जगह उल्टी चीजे होंगी, जैसे सन्यासी गृहस्थ होंजाएँगे और गृहस्थ सन्यास की और भागेंगे। मांस मद्य को खाने वाले महान और शाकाहारी मूर्ख बताए जाएंगे। न्यायधीश न्याय नही कर सकेंगे और अपराधियों को क्षमा कर दिया जायेगा। अपराधी खुलेआम घूमेंगे और निर्दोष दण्ड भोंगेगे।
इसी कलि का युद्ध कल्कि के साथ होता है जिसमे वह इसे हटाकर सतयुग को लाएंगे।

अगर हम मुहम्मद और अरब के हिसाब से देखे तो सबसे पहली बात तो यह है कि अरबी संस्कृति में कलि जैसा एक ही किरदार या करैक्टर है जिसे मुस्लिम लोग शैतान कहते है। लेकिन बड़ी मजेदार बात है कि मुहम्मद जी ने कभी भी शैतान या कलि से कोई युद्ध नही लड़ा।

बल्कि उल्टे एक बार शैतान ने ही मुहम्मद के मुंह से अपनी आयत कुरान(जो कि अल्लाह की किताब समझी जाती है) में निकलवा दी थी???

किस्सा यू है कि जब मुहम्मद मक्का में थे तो एक दिन वह कुरान की सूरह नज्म (कुरान 53: 19- 20) की आयत कह रहे थे जिसमें अरबी देवियों लात, मनात और उज्जा का जिक्र आया तो इसी के अगले आयात में उन्होंने कहा कि ये एक घरनिक (मददगार बगुले) है , जिनकी शफा(अल्लाह की तरफ जाने में मदद करने वाले जैसे वली) की जरूरत है।

लेकिन बाद में मुहम्मद ने सोचा कि यह तो मेरे मुंह से तीन देवियो की तारीफ निकल गयी तो उन्होंने कहा कि शैतान ने मेरे मुंह से यह हराम बात निकलवा दी थी। बाद में उन्होंने उस आयत को कुरान से हटवा दिया था।

(इब्न हिशाम की सिरत रासुल्लाह और अल तबारी)

तो आप शैतान की ताकत को देख सकते है कि उसने मुहम्मद जो की अल्लाह के सबसे बड़े नबी बोले जाते है। उनतक से गलत बात बुलवा दी जिसे उन्होंने खुद ने माना और जिस आयात को कुरान में शैतानी आयत कहा जाता है।

तो मुहम्मद कल्कि कैसे हो सकते है, जब उन्होंने कलि से कोई युद्ध नही लड़ा???

अगर हम दूसरे तरीके से भी देखे तो पाएंगे कि मुहम्मद के जाने के बाद भी पाप और अधर्म कम नही हुआ उल्टे बढ़ गया है। हत्या बलात्कर और जंग जारी है जो की अनेकों बार मुस्लिमों के द्वारा किए गए है, तो मुहम्मद कल्कि कैसे
हो सकते है??

कोक और विकोक

कल्कि पुराण में वर्णित है कि कल्कि का युद्ध कोक और विकोक नाम के योद्धाओं से होगा जो कि अजब शक्ति वाले होंगे। इनकी शक्ति यह है कि अगर इनमें से एक को भी मारो, तो दूसरा उसे देखकर मरे हुए को जिंदा कर देता था। जिस वजह से कल्कि जी थोड़े देर तक दोनों को अलग
अलग मारते रहे और इन्हें पुन: जीवित होते देखते रहे। फिर ब्रह्मा जी ने उन्हें यह राज बताया कि आपको इन दोनों को एक साथ मारना होगा, जिसपर कल्कि जी ने दोनों को एक ही वार से मुक्के की चोट से मार दिया।

(कल्कि पुराण तीसरा अंश अध्याय 7 श्लोक 3-36)

दूसरी तरफ मुहम्मद और इस्लाम मे कभी भी कोक विकोक का कोई वर्णन नही हुआ है और न ही कोक विकोक जैसे किसी भी योद्धा से उनका युद्ध नही हुआ था।

देहावसान

कल्कि जी जब कलि का अंत कर देंगे तो वह सतयुग की स्थापना करके अंत मे हिमालय में साधना करते हुए अपने प्राण त्याग कर वापस अपने दिव्य स्वरूप में चले जायेंगे।

उनकी मृत्यु साधारण और प्राकृतिक होगी और उनके साथ ही उनकी दोनों पत्नियां रमा और पद्मा भी अग्नि में प्रविष्ट हों जाएंगी।

(कल्कि पुराण तीसरा अंश अध्याय 19 श्लोक 22-26)

मुहम्मद जी की मृत्यु मदीना में 632 ईसा पश्चात में हुई थी, उनके मरने का कारण कोई बीमारी थी हालांकि कुछ हदीस में उनकी मौत की वजह जहर बताई जाती है।

जैसे सहि बुखारी वॉल्यूम 5.713 में आएशा बिन्त अबु बकर जो कि मुहम्मद की बीवी थी ने कहा है कि रसुल्लाह ने अपनी मौत में फरमाया था कि खैबर में खाये खाने में जहर के असर से ऐसा लगता है कि मेरी दिल की नस फट रही है।

उनकी मौत पर उनकी किसी बीवी के द्वारा मौत को गले नही लगाया गया।

उपसंहार

इस पुस्तक के अंत मे यह निष्कर्ष निकलता है कि मुहम्मद के जीवन की कोई भी बात कल्कि अवतार से मेल नही खाती है,बल्कि मुहम्मद स्वयं ही सनातन धर्म के उलट काम करते पाए जाते है।

इसीलिए मुस्लिमो का यह दावा की मुहम्मद ही कल्कि है शाश्त्रो और खुद उनके जिंदगी के हिसाब से ही मनघड़ंत और झूठा है।

अगर कोई भी सनातनी इन सभी तथ्यो को पढ़ता है तो उसके सभी शक का समाधान होगा और वह इस झूठे प्रपंच से जिसे खुद मुस्लिम हिन्दू पंडितों के आग्रह से बांटते है का खंडन होगा।

कृपया करके आगे भी सनातनी हिन्दुओ को यह किताब जरूर बांटे और अपने धर्म मे सहयोग करे।